द्वारा

डॉ आशीष सिसोदिया

 लोकगीतों का वर्गीकरण -

 राजस्थान में हर क्षेत्र के अपने लोकगीत है। जैसे मारवाड़ी लोकगीत, मेवाड़ी लोकगीत, वागड़ी लोकगीत आदि। लोकगीतों के असीमित क्षेत्र को देखते हुए वर्गीकरण की सीमा रेखा में बाँटना अत्यंत दुष्कर कार्य है, फिर भी अध्ययन की सुविधा हेतु इन्हें निम्नलिखित वर्गों में बाँट सकते हैं -

 (1) देवी-देवताओं के गीत (2) षोडश संस्कारों के गीत (3) पारिवारिक संबंधों के गीत (4) पर्वोत्सवों के गीत (5) बालक-बालिकाआंे के गीत (6) पेशेवर गायकों के गीत (7) ऐतिहासिक चरित्र प्रधान गीत (8) अन्य गीत।

 (1) देवी-देवताओं के गीत - राजस्थान धर्मप्राण प्रांत है। यहाँ ’भाठो-भाठो देव‘ की पूजा होती है अर्थात् यहाँ अनगिनत देवी-देवताओं की आराधना की जाती है। यहाँ का पत्थर-पत्थर महादेव है। इनकी स्तुति में गीत गाए जाते हैं। इनमें प्रमुख रूप से चामुण्डा देवी, करणी माता, हिंगलाज, नागणेच्याजी, जीणमाता, शीतलामा, संतोषीमाता, आईमाता, श्रीयादे, सच्चियायमाता, भटियाणी रानी, आवरीमाता, अम्बामाता आदि लोकदेवियाँ तथा बालाजी, भैरूजी, भोमिया जी, खेतरपालजी, रामदेवजी, पाबूजी, हड़बूजी, तेजाजी, गोगाजी आदि लोकदेवता की स्तुति में गीत गाकर जनमानस ने अपनी आस्था प्रकट की है। इसी तरह घर के देवता यानि पूरबजों के गीत गाने की भी परंपरा है। देवियों की स्तुति में गाया जाने वाला गीत द्रष्टव्य है -

 ’’चालो चालो अपै चैसठ देविया, जोधाणों जोवाजी जाय।

 जोधाणों रा कासुण जोवणो, आवणो ऐ जोधाणे महाराजों रा राज।।‘‘

 राजस्थान में देवी की स्तुति के बाद काला-गोरा भैरू का भी आह्वान किया जाता है -

 ’’भैरव काला अर भैरव गौरा ओ वैगेरो आव,

 तो बिन ओ भैरव ओ बिना विरध न होवसी।‘‘

 इसी तरह लोकदेवता बाबा रामसा पीर का ये गीत भी प्रसिद्ध है -

 ’’ऐ रूणिचे रा धणिया अजमल जी रा कंवरा,

 माता मैणादे रा लाल, राणी नैतल रा भरतार।।

 म्हारो हेलो सुणौं नी रामा पीर जी।

 यह गीत राजस्थान में अत्यंत भक्तिभाव से गाया जाता है।

 (2) षोडश संस्कारों के गीत - हिंदुओं के धर्मशास्त्र में सोलह संस्कारों का विधान है। इन संस्कारों के अवसर पर गीत गाने की परंपरा है। इनमें गर्भाधान, जन्मोत्सव, नामकरण, मुंडन, जनेऊ, विवाह, अन्त्येष्टि आदि अवसरों पर गीत गाने की परंपरा है।

 (क) जन्म संस्कार के गीत - इन गीतों में संतानोत्पत्ति की कामना, गर्भाधान तथा प्रत्येक मास में होने वाली जच्चा की इच्छाओं का मनोवैज्ञानिक वर्णन मिलता है तथा बच्चे के जन्मोत्सव एवं सूरज-पूजन पर गीत गाए जाते हैं। इनमें हालरा, पीला आदि प्रमुख हैं। सन्तान प्राप्ति की कामना का ये गीत द्रष्टव्य है-

 ’’छींको तो पडियो ए माता चुरमो ए

 ठणके सिरावण मांगण वालो नहीं ऐ माता राणकदे

 म्हाने माणस क्यों सिरज्या।‘‘

 निःसंतान नारी की मार्मिक वेदना देखिए -

 ’’सासु तो कैवे म्हारी बहु बड़ बांझणी

 परणियों तो ल्यावै लोडी सोक।‘‘

 और जब विभिन्न देवी-देवताओं की मनौतियों के बाद जब कोई नारी गर्भ धारण करती है तो खुशी का ठिकाना नहीं रहता। उसकी हर दोहद पूरी की जाती है। प्रथम मास से लेकर बच्चे के जन्म तक की चच्चा राणी की इच्छाओं का वर्णन इस गीत में देखा जा सकता है -

 ’’पैलो मास उतरियों ऐ जच्चा वे रो आलसिये मन जाय।

 ऐ दूजो मास उतरियो ऐं जच्चा वे रो भूकतड़े मन जाय।

 तीजो मास उतरियो ऐ जच्चा नींबूड़े मन जाय।

 चैथो मास उतरियों जच्चा मालपुड़े मन जाय।

 पाँचवों मास उतरियों ऐ जच्चा घेवरिये मन जाय।।

 जब पुत्र का जन्म होता है तो थाली बजाई जाती है। ढोलिनें (गायक जाति की महिलाएँ) गीत गाकर नेग प्राप्त करती हैं। गींगला (पुत्र) के जन्म पर गाया जाने वाला ये गीत देखिए -

 ’’ऐ थारे गीगो जलम्यो आधी रात ऐ

 ऐ थारे गुल बेच्चों परभात ऐ

 उठो मानेतन खोलो कोथलों

 बँचो बधाइयाँ दोनूं हाथ सु ऐ।‘‘

 जब बच्चा घुटनों के बल चलने लगता है तो माँ फूली नहीं समाती। वह खाती (सुथार) से कहती है-

 ’’सुण सुण रे खाती रा बेटा, गाडूलो गड़ ल्याय रे

 गाडूलो गड़ ल्याय म्हारै गीगा रे मन भाव।

 आम को गाडूलो घड़ ल्याय, चाँदी का पात चढ़ाय।

 सोने की खाती रा बेटा, की ठोंकाय।।‘‘

 इसी तरह बालक के नामकरण, अन्नप्राश, मुंडन, जनेऊ आदि अवसरों पर भी राजस्थान में गीत गाए जाते हैं।